स्थापित : 13 अप्रेल 1987

RNI NO. : RAJHIN/2002/9625

शहीद जगत

राष्ट्रीय भावना एवं सामाजिक जनचेतना जागृत करने वाली हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 15 अंक : 4 | कोटा, 15 अप्रेल 2017 | पृष्ठ : 4 | मूल्य 2 रूपये

महर्षि दयानंद के विचार विष्व के लिए प्रेरणादायक हैं-कोठारी

विश्व कल्याण के लिए की आर्य समाज की स्थापना, भारतीय नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस कार्ड का विमोचन

कोटा। आर्य समाज जिला सभा द्वारा संक्षिप्त कार्यक्रम सर्किट हाउस में राजस्थान के लोकायुक्त न्यायमूर्ति सज्जन सिंह कोठारी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में आर्य समाज जिला सभा द्वारा तैयार किया गया नव संवत्सर भारतीय नववर्श आर्य व आर्य समाज स्थापना दिवस के मल्टीकलर कार्ड का विमोचन करते हुए अपने वक्तव्य में महर्शि दयानंद के व्यक्तित्व एवं कष्तित्व र प्रकाष डालते हुए कोठारी ने कहा कि महर्शि दयानंद अपने वेदभाश्य एवं सामाजिक सुधार के कार्यों से ही महापुरूशों की श्रेणी में आ जाते हैं। लेकिन मुम्बई में 1875 में आर्य समाज की स्थापना कर उन्होनें आने वाले समय के उन्होनें एक ऐसा सांगठनिक ढांचा तैयार कर गये इससे उनके सम्मान में मन स्वत: नतमस्तक हो जाता है। आर्य समाज के छटे नियम से दयानंद जी की संसार के प्रति कल्याण की भावना का ज्ञान होता है। अत: महर्शि दयानंद की यह विचारधारा विष्व के लिए प्रेरणादायक है। वर्तमान समय में देषभर में फैला आर्य समाज सामाजिक सुधार के कार्यों को गति प्रदान कर रहा है।

यहां पर साथ ही में आर्य समाज कोटा द्वारा किए जा रहे कार्यो की प्रषंसा करता हुं तथा यह आषा रखता हूं कि कोटा की सभी आर्य समाजें जन-जन तक महर्शि के संदेष को पहुंचाए। इससे महर्शि दयानंद का मिषन तेजी से आगे बढेगा।

आज आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चद्दा की अगुवाई में डीएवी की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, धर्म षिक्षक षोभाराम आर्य, समाजसेवी डॉ. वेद प्रकाष गुप्ता, आर्य समाज रामपुरा के प्रधान कैलाष बाहेती, तिलक नगर के प्रधान ओमप्रकाष तापडिया, भीमगंजमण्डी के प्रधान प्रेमनाथ कौषल, खेडारसूलपुर के प्रधान रामनारायण, तलवण्डी के प्रधान आर.सी. आर्य, रेलवे कॉलोनी के मंत्री करणसिंह आर्य, खेडारसूलपुर के बंषीलाल, रामकल्याण, उदय प्रकाष, अस्थाना, वैदमित्र वैदिक, राधावल्लभ राठौर आदि सर्किट हाउस पहुंचे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चद्दा ने कहा कि महर्शि दयानंद ने विष्व कल्याण के लिए ही आर्य समाज की स्थापना की। उसी मार्ग पर चलते हुए कोटा जिला सभा धार्मिक, आध्यात्मिक व परोपकारी कार्यों के कारण कोटा आर्य समाज की एक विषिश्ट पहचान बनी है। आर्य समाज के इन्ही कार्यों के कारण वर्तमान समाज के विचारों एवं कार्यों में परिवर्तन नजर आ रहा है।

कार्यक्रम की विषिश्ट अतिथि के रूप में डीएवी स्कूल की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम ने कहा कि महिला सषक्तिकरण के मूल में महर्शि दयानंद के विचार काम आ रहे हैं। महर्शि ने सर्वप्रथम महिला षिक्षा की बात कही जिसका परिणाम है कि आज विष्व पटल पर महिलाएं तेजी से उभर रही हैं। डीएवी संस्था छात्रों में वैदिक संस्कार व परस्पर सहयोग की भावना से प्रेरित अनेक कार्य कर रही है।

जिला मंत्री कैलाष बाहेती ने बताया कि कार्यक्रम से पूर्व मुख्य अतिथि का गायत्री मंत्र से सज्जित दुपट्टा व केसरिया साफा पहनाकर वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ स्वागत किया गया। जिला सभा के मंत्री ने उपस्थित सभी अतिथियों एवं आर्य जनों का आभार व्यक्त किया।

देश की आजादी में क्रांतिकारी शहीदों का बड़ा योगदान - पाण्डेय

पतंजलि योग समिति ने बलिदान दिवस मनाया

कोटा। भारत स्वाभिमान एवं पतंजलि योग समिति कोटा ने शहीदे आजम सरदार भगतसिंह, शहीद राजगुरू व शहीद सुखदेव का बलिदान दिवस राजकीय महाविद्यालय में विशाल बैनर पर युवा छात्र-छात्राओं से श्रद्धांजलि लिखवाकर मनाया।

भारत स्वाभिमान के जिला संयोजक विवेक गर्ग ने बताया कि कार्यक्रम का प्रारंभ राज्य प्रभारी अरविन्द पाण्डेय ने दीप प्रज्जवलन कर किया। जिलाध्यक्ष प्रदीप शर्मा, महिला पतंजलि योग समिति की जिला प्रभारी श्रीमती मिथलेश, पतंजलि किसान सेवा समिति जिला प्रभारी प्रहलाद सिंह, जिला आर्य समाज के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, संगठन मंत्री रंधावा, डॉ. परमानंद, लक्ष्मण सिंह, रामगोपाल मीणा, अजय सूद, कपिल शर्मा, देवेन्द्र यादव ने माला पहनाकर व पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। महाविद्यालय के युवा छात्र-छात्राओं ने जयघोष के मध्य शहीदों को अपनी श्रद्धांजलि के रूप में उद्गार लिखकर व्यक्त किये।

राज्य प्रभारी अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि शहीदों ने सांसारिक व पारिवारिक मोह का त्यागकर देश को आजाद कराने के लिए दुखों को अपनाया। उन्होंने कहा कि देश को आजादी दिलाने के लिए भगतसिंह में जुनून इस कदर था कि मात्र 23 साल की उम्र में अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें फांसी की सजा दे दी, और वे देश की जनता में आजादी की मशाल जलाने के लिए हंसते हंसते फांसी के फंदे पर झूले गए।

जिला संयोजक विवेक गर्ग ने कहा कि बलिदानी वीर-वीरांगनाओं के त्याग से हम स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं, इनका ऋण कभी नहीं चुका सकते।

पतंजलि योग समिति के जिलाध्यक्ष प्रदीप शर्मा ने कहा कि छात्र-छात्रा युवा भारत से जुड़ें, सहयोग शिक्षक बनकर अपनी एवं राष्ट्र की उन्नति में अपना सहयोग प्रदान करें।

मासिक
शहीद जगत
कोटा, 15 अप्रेल 2017

सम्पादकीय

मुसीबत की थैली

पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने के मामले में प्लास्टिक की थैलियों की क्या भूमिका रही है, यह अब किसी से छिपा नहीं है। प्रदूषण से लेकर इसके दूसरे घातक प्रभावों की बाबत लंबे समय से चिंता जताई जा रही है। लेकिन दशकों से इससे निपटने और इस पर पाबंदी लगाने के दावों के बावजूद आज भी पॉलिथीन के इस्तेमाल को रोका नहीं जा सका है। अब मध्यप्रदेश सरकार ने अगले महीने की शुरुआत से प्लास्टिक की थैलियों के इस्तेमाल पर पाबंदी लगाने की घोषणा की है। इस पहल में नया यह है कि अब तक जहां प्लास्टिक को पर्यावरण के लिहाज से कई स्तरों पर खतरनाक बता कर इस पर रोक लगाने की बात की जा रही थी, वहीं मध्यप्रदेश सरकार ने पाबंदी के लिए पर्यावरण के अलावा गाय के लिए खतरे को भी मुख्य वजह बताया है। मध्यप्रदेश सरकार का कहना है कि चूंकि अपने लिए खाना तलाशती गायें प्लास्टिक की थैलियों को भी खा जाती हैं, इसलिए वे बीमार हो रही हैं और उनकी मौत भी हो जाती है। दरअसल, कचरे के ढेर में सड़ती प्लास्टिक की थैलियां आज न केवल गाय, बल्कि खुले में घूमने वाले दूसरे पशुओं को भी बुरी तरह अपनी चपेट में ले रही हैं। बहरहाल, बाजार से कोई भी वस्तु खरीदने जाते शायद ही किसी व्यक्ति के पास अपना थैला होता है। सब्जियों से लेकर दूसरे उपयोग का कोई भी छोटा-मोटा सामान लाने के लिए लोग बिना किसी संकोच के प्लास्टिक की थैलियों का इस्तेमाल करते हैं। ये सारी थैलियां सड़कों के किनारे कचरे के ढेर पर जाती हैं और फिर नालियों में पानी के बहाव को रोकने की वजह बनती हैं। आज कोई भी देख सकता है कि कचरे के ढेर में दूसरी किसी भी वस्तु के मुकाबले प्लास्टिक की थैलियां ही ज्यादा होती हैं। मध्यप्रदेश सरकार के मुताबिक नए कानून में केवल प्लास्टिक की थैलियों और पन्नियों पर पाबंदी होगी, इससे बनने वाली बाल्टी या अन्य सामान पर कोई रोक नहीं होगा। आज घरेलू उपयोग की बहुत सारी वस्तुएं बाजार में उपलब्ध हैं जो प्लास्टिक से ही बनी होती हैं। सस्ता होने की वजह से ज्यादातर लोग धातुओं के बजाय इन्हीं प्लास्टिक से बनी चीजों का इस्तेमाल करते हैं। शायद ऐसे सामानों पर निर्भरता को देखते हुए ही मध्यप्रदेश सरकार ने फिलहाल प्रतिबंध को प्लास्टिक की थैलियों तक सीमित रखा है। लेकिन सच यह है कि थैलियों के साथ-साथ प्लास्टिक से बने सामानों को तैयार करने में भी कई तरह के खतरनाक रसायनों के घोल का इस्तेमाल होता है, जिसमें रखे गए खाने-पीने के सामान पर इसका सेहत के लिहाज से बुरा असर पड़ता है। इनमें कई ऐसे रसायन होते हैं जिनकी थोड़ी भी मात्रा अगर शरीर में चली जाए तो वह कैंसर की वजह बन सकती है, उससे इंसानी मस्तिष्क के ऊतकों या फिर हृदय पर घातक असर पड़ सकता है। मुश्किल यह है कि बाजार के फैलाव के साथ-साथ वस्तुओं की बिक्री में थैलियों और पैकिंग आदि में पॉलिथीन का जितना इस्तेमाल होने लगा है, उसका व्यावहारिक विकल्प निकाले बगैर इसे पूरी तरह रोक पाना शायद संभव नहीं हो। कागज और प्लास्टिक के मिश्रण से बनी गलनीय थैलियों को बढ़ावा देने के सुझाव अक्सर सामने आते रहे हैं। लेकिन अब तक उस ओर कोई ठोस पहल करने की जरूरत नहीं समझी गई।

बैसाखी सुनहरी समृद्धि का पर्व

अर्जुनदेव चद्दा

धरती को मस्त मयूर ही तरह थिरकते देखना हो तो बैसाखी का इंतजार कीजिए। अब जबकि देश, काल की सीमाएं समाप्त हो चुकी हैं तो पंजाब से निकल कर समग्र भारत में छा जाने वाले संस्कृति, समृद्धि, शहादत और साम्प्रदायिक सौहार्द का यह इकलौता त्यौहार है जिसमें उल्लास उफनती नदी की तरह उमड़ता है। झूमती-इठलाती सुनहरी बालियों से अटे खेतों से समृद्धि का रैला निकलता है तो पंजाब की लोक संस्कृति संपूर्ण वैभव का दिग्दर्शन कराते हुए बच्चों से लेकर बूढ़ों तक को..... वे जट्टा आई बैसाखी का समूह गान कराते हुए ठुमकने को ठेल देती है। तब उमंगों के हिंडोले पर उड़ान भरती जट्टी, सुए वे चीर बालिया फूल किकरां दे। किकरां लाई बहार ते मेरे मित्तरां दें..... का गगनभेदी आलाप लेते हुए अपने मीत को रिझाती है, कि 'लाल कपड़ों वाले जरा आल्हाद का करिश्मा तो देख की कटि भरे दरख्तों वाले कीकर भी फूलों से लद गए हैं। कंटीलें बबूल के पेड़ों पर झूमती बहार आ गई तो मस्ती के साथ मित्रों का मौज-मेला सजने दें.....।

सोना उगलती धरती की उल्लासपूर्ण अगवानी के मामले में तीन त्यौहारों को मुख्य माना जाता है, बैसाखी, दीपावली और दक्षिण भारत का पोंगल। बैसाखी इन तीनों त्यौहारों में सिरमौर गिनी जाती है। अभ्यर्थना का पर्व है। सोने सरीखी फसल को खेतों से समेटने की शुरूआत इसी पर्व से होती है- लेकिन अन्य प्रदेशों की तरह सब कुछ सामान्य ढंग से नहीं होता, बल्कि दिन-रात की कड़े मेहनत को स्वर्णिम सौन्दर्य में ढलते देखकर यहां का किसान फूला नहीं समाता। इधर फसल पर दराती चलती है उधर गबरू जवान अपनी पगड़ी के पेंच संवारते और मूछों पर ताव देते हुए तिल्लेदार जूतियां पहने ढोलक की थाप पर भांगड़ा करने कूद पड़ते हैं। नवोढ़ा युवतियां भी उनके साथ ताल से ताल मिलाती हुई फरमाइशों का अंबार लगा देती हैं कि, मेरी घघरी नूं घुंघरू लवादे जे मेरी टोर देखणी.....। उल्लास में डूबी अल्हड़ जट्टी अपने मर्द को चुनौती देती नजर आती है कि, ' अगर मेरी मादकता और जवानी के तेवर देखना चाहते हो तो मेरे घघरी में घुंघरू लगवा दो.....।

संस्कृति, अध्यात्म और लोकाचार से जुड़े ऋतु परिवर्तन का बैसाखी पर सायास साक्षात होता है। यद्यपि शीत की जकड़न से मुक्त अंगड़ाई लेती धरती का नूतन स्पंदन तो ऋतुराज बसंत के आगमन से ही शुरू हो जाता है। होली की दस्तक के साथ ही मौसम में उन्माद के रंग महकने लगते हैं, जो चंग और ढोल की थाप की अनुगूंज में महौल को मनोरम बना देते हैं। लेकिन मौसम की मादकता तो बैसाखी पर ही निखरती है। बैसाखी पर उमड़ता उल्लास केवल भांगड़ा तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि इन दिनों पंजाब की संस्कृति अपने पूरे वैभव पर होती है- तब मेलों की इतनी रेल-पेल होती है कि एक-दूसरे को ठेलकर ही आगे बढ़ा जा सकता है। इन मेलों में पशुओं की दौड़, पहलवानों केदंगल और ढेरों स्पर्धाओं के अनूठे रंग देखने वालों को गहरे सम्मोहन में डाल देते हैं। भांगड़ा के असली रंग भी यहीं नजर आते हैं। हाथों में लम्बी डांग और कलाईयों में रंगीन रूमाल लहराते हुए बोली और ताल पर मस्ती में झूमते गबरू जवान नाचते हैं तो रंग-बिरंगी पगड़ियों पर लश्कारा नजरों को ठहरने तक नहीं देता। ढोल के बोल और ढोल की थाप तो और ढाती है। 'बोल' डालने का अंदाज भी गजब करता नजर आता है-'जब थिरकती युवामंडली के घेरे के बीच में युवक कान पर हाथ रखकर दूसरी बांह सामने फैलाकर गाता है, तो नृर्तकों के पांवों में जैसे बिजली सरीखी गति आ जाती है। इस पवित्र त्यौहार के साथ आस्था का सुर्ख वर्क भी जुड़ा हुआ है। इसी दिन गुरू गोविन्द सिंह जी ने खालसा पंथ की नींव रखी थी। भारतीय संस्कृति को लोकाचार से जोड़ने वाला बैसाखी पहला पर्व है जो हरियाली का इतना अनूठा अभिनंदन करता है कि श्रद्धा, समृद्धि और शहादत के रंगों से गुजरता हुआ धरती और आकाश तक को नाचने को विवश कर देता है। श्रम को समादृत करने वाला यह त्यौहार कोई एकांगी नहीं है। बल्कि वर्ग भेद मिटाकर सबको भाईचारे की मिठास में गहरे तक भिगो देता है। बैसाखी के अवसर पर कवि ने कहा है कलियां ने जद खुशबू वंडी, फुलां वंडे हासे, होया सवेरा अस्सी वेखिये महक खिड़ी सब पासे।

लोकगीतों से महकती बैसाखी

अर्जुनदेव चद्दा

संस्कृति के सात रंगों को सहेजता बैसाखी इकलौता त्यौहार है जिसका एक एक लम्हा लोकगीतों के सोंधेपन से महकता है। लहलहाती फसलों से उमड़ते उल्लास से मदमस्त पंजाब के गबरू जवान अपनी तुर्रेदार पगड़ियों के पेंच संवारते हुए ठसकेदार तिल्ले की जूतियां पहने ढोल की थाप पर भांगड़ा करते हैं तो गीतों का उल्लास उमड़ने लगता है। ताल से ताल मिलाती झांझर की झंकार के बीच नवोढ़ाएं गीतों में फरमाइशें पिरोने से नहीं चूकती, 'मेरी घघरी नूं घुंघरू लवादे तो फिर मेरी टोर वेखले.....।' लोक संस्कृति के जितने सुनहरे रंग बैसाखी मे नजर आते हैं, शायद ही किसी और पर्व पर दमकते होंगे। इस त्यौहार पर गबरू जवानों का उन्मादी जोश सुकोमल सौंदर्य के गिर्द एक अनूठी मस्ती का माहौल रच देता है- ' गंदला बरगी कुड़ी, कि गंदला तोड़ दी फिरे, ओनू गंदला दी भुल गई पिछोण, कणकां मरोड़ दी फिरे.....।' गेहूं की बालियों पर दराती चलाते सुकोमल हाथों की मशक्कत पर इससे सुंदर गीत की शायद ही कोई रचना हो सकती है। उल्लास उसका रग-रग में प्रस्फुटित होता है। अपने पति को रिझाने का नवोढ़ा कोई मौका नहीं चूंकना चाहती। उसका बिंदासपन लोकगीतों में उमड़ पड़ता है कि, 'सुए वे चीरे वाले फुल किकरांदे लाई बहार मेले मितरा दें.....' नवोढ़ा पति की मनुहार करती नहीं अघाती कि, 'अब तो शूल सरीखे कीकर के पेड़ो में भी फूल खिल गए हैं। चुभने वाले कीकरों पर भी बहार आ गई है तो ए लाल वस्त्रों वाले मित्रों के मौज मेले लगने दें.....।' गिद्दा पर ताल देने के साथ ठुमकती बिंदास बालाएं जब आपा लेती हैं कि, 'वे जट्टा आई बिसाखी, नचले-गाले, भंगड़े पाले वे जट्टा आई बिसाखी..... 'तो जट्टा से नहीं रहा जाता और वो पूरी ठसक के साथ भंगड़े के लिए कूद पड़ता है। लोक गीतों का गहरा उछाह लिए भंगड़ा इतनी मस्ती बिखेरता है कि नाचने से हिचकने वालों के पावों में भी बिजली भर देता है। उन्हें बोलियों और टप्पों के साथ बुलाया जाता है- 'बारह बरसती खटन गया सी खटके लिआया आलू, मित्रों आओ वेखो साडा भंगड़ा हो गया चालू। इतिहास संजोए और घटनाओं से अटे बैसाखी श्री के दिन तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के प्रति आज भी इन शब्दों में रोष उमड़ता है, 'मेरा कालानी सरदार गोरयां नूं दफा करो। मैं आप तिल्ले दी तार, गोरियां नूं दफा करो।

खेतों में उमड़ती समृद्धि जब घरों में पहुंचती है तो महिलाएं फरमाइशों का अंबार लगा देती हैं। सोलह श्रृंगार किए जट्टी का मन मेले में जाने को मचल उठता है। उसकी मस्तानी उड़ान गीतों में बखूबी झलकती है, कि मेले में आने को वो कितनी उतावली है, 'पैर धोकर झांझरा, पाउंदी, वैखदी, आउंदी। ओए-ओए शौकण मेले दी। जूती खल्दी मरोड़ा नइयां झल दी, हो-हो शौकण मेले दी.....।

इन गीतों में जिन्दगी थिरकती ही नहीं बल्कि धड़कती भी है। इन गीतों में पंजाब की लोक परम्पराओं का अद्भुत दिग्दर्शन होता है। गीतों की मिठास से लोगों रिश्तों के प्रति ललक जागी है तो इसकी गूंज विदेशों तक में सुनाई दी है। लोकाचार, लोक संस्कृति और लोक गीतों के प्रति जितनी ललक पंजाब में दिखाई देती है, शायद कहीं ओर नहीं। दिलचस्प बात यह है कि इस सुहानी संस्कृति के रंग भंगड़ा और गिद्दा में इतना मूर्त रूप ले लेते हैं कि लोगों को खाने तक की सुध नहीं रहती। तभी तो कहा है कि , 'गिद्दा गाते, भंगड़ा करते धूम मचा दें, वे जट्टा आई विसाखी....।

जलियांवाला बाग हत्याकांड -सोचा समझा नरसंहार था

अर्जुनदेव चद्दा

सोना उगलती धरती के अभिनन्दन का पर्व बैसाखी, उमड़ते उल्लास की अगवानी की बजाय कैसे सामुहिक नरसंहार बन गया और आजादी के इतिहास में रक्तरंजित अध्याय के रूप में दर्ज हुआ? इसे लेकर आज भी अनेक प्रश्न अनुत्तरित हैं। किन्तु इसका बड़ा सच ब्रिटिश हुक्मरानों द्वारा हिन्दू-मुस्लिम भाईचारे की भावना पर आघात पहुंचाने की मंशा से जुड़ा था। आजादी के आंदोलन के दौरान जब हिन्दू-मुस्लिम समुदायों के आपसी सद्भाव को खत्म करने के अंग्रेजों के प्रयास जारी थे, उसी दौरान अमृतसर में मुस्लिम नेता डॉ. किचलू और हिन्दू नेता डॉ. सत्यपाल ने अंग्रेजों की ''फूट डालो राज करो'' की नीति में झुठलाने का बीड़ा उठाया था। नतीजन अंग्रेजों ने दोनों नेताओं को अमृतसर छोड़ने के आदेश दे दिए थे। इन्हीं के निष्कासन के विरोध में अमृतसर में जो घटनाक्रम चला उसकी परिणती कुछ दिनों बाद एन बैसाखी के दिन जलियांवाला बाग हत्याकांड के रूप में हुई।

इतिहास को टटोलें तो कई बातें उभरकर सामने आती है। असल में जलियांवाला बाग कोई बाग नहीं होकर चौतरफा मकानों से घिरा एक जमीन का टुकड़ा था। जिसपर एक कुंआ, एक समाधि और तीन दरख्त थे। इस क्षेत्र से मकानों की कतार के बीच में बाहर निकलने वाली गलियां इतनी तंग थी कि बमुश्किल कोई निकल सकता था। अलबत्ता ठीक से आवाजाही का एक ही रास्ता था। उन दिनों रोलेट एक्ट को लेकर देश का माहौल बेहद गर्म था। लगभग 27 हजार वर्ग मीटर क्षैत्रफल वाले आग में 13 अप्रेल 1919 के दिन अच्छी खासी हलचल बैसाखी के त्यौहार को लेकर थी। बच्चे, बूढ़े, जवान और औरमें भारी तादात में वहां बैसाखी के मौजे-मेले में व्यस्त थे। लेकिन चूंकि हालात राजनीतिक गरमा-गरमी के थे। इसीलिए सभा जैसा नजारा भी वहां था और भाषण देने वाले भी एक के बाद एक बोल रहे थे। किन्तु लोगों का ध्यान पूरी तरह इन भाषणों की तरफ होने के बजाये बैसाखी के मनोरंजक कार्यक्रमों की ओर था। वस्तुतः कुल मिलाकर स्थिति यह थी कि सभा सरीखा जमावड़ा डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल के निष्कासन के विरोध में था। जिस समय लोग ध्यानमग्न होरक वक्ताओं को सुन रहे थे, शाम के पांच बज चुके थे। तभी अचानक 'फ़ौजी बूटों की आवाज सुनाई दी और बाग के एक सिरे पर बने संकरे रास्ते में अंग्रेज अफसर ब्रिग्रेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर की अगुवाई में दो कतारों में चलती फौजी टुकड़ी प्रवेशद्वार के एक तरफ दीवार के सहारे फैल गई और जनरल चिल्लाया..... फायर। इस फरमान के साथ ही नरसंहार का यह भयानक सिलसिला लगभग 10 मिनट तक चलता रहा तथा जब सिपाहियों का गोला बारूद पूरी तरह खत्म हो गया जब कहीं जाकर यह संहार थमा। कुल मिलाकर 1650 राउण्ड गोलियां चलीं। गोलियां अलग-अलग चल रही थी। बहुत से लोग मारे गये। गोलियां चलना बंद होते ही डायर अपने सैनिकों को लेकर शहर से बाहर रामबाग चला गया। पहले यह समझा गया कि लगभग 200 लोग मारे गये। उस समय तक यही संख्या घोषित की गई थी। बाद में इलाहाबाद की सेवा समिति की मदद से एक सूची बनी, जिससे ज्ञात हुआ कि 372 लोग मारे गये। इनमें लगभग 87 लोग शहर के बाहर के गांवों से आए हुये थे। घायलों की संख्या मृतकों से तिगुनी थी। लेकिन प्रत्यक्षदर्शियों को कहना है कि मारे गए लोगों की संख्या एक हजार से ज्यादा थी। गोलियों से तथा भगदड़ से लगभग 2000 सिक्ख, हिन्दू और मुस्लिम घायल अवस्था में मर रहे थे अथवा मर चुके थे। जनरल डायर ने तुरंत आदेश जारी कर दिया कि रात के आठ बजे बाद जो घर से बाहर देखा जाएगा उसे गोली मार दी जाएगी। उसने घायलों के लिये डॉक्टरी मदद का इंतजाम न खुद किया और ना ही किसी को करने दिया।'

घटना के दिन 24 अप्रेल को हालात शांत रहने के बावजूद 15 अप्रेल को अमृतसर में ''मार्शल लॉ'' लागू हो गया। इसके बाद एक लम्बे समय तक पंजाब अंग्रेजों के जुल्म से जूझता रहा।

कुछ इतिहासकार जलियांवाला बाग हत्याकांड को अंग्रेंजों का सोचा समझा षडयंत्र मानते हैं। उनका कहना है कि इस नरसंहार की भूमिका तो एक दिन पहले 12 अप्रेल को ही बन गई थी। इस दिन धाबा खटीकन में हंसराज नामक एक व्यक्ति से सभा बुलाकर अगले दिन यानि 13 अप्रेल को जलियांवाला बाग में सभा करने की योजना को मूर्त रूप दिलवा दिया उस पर संदेह की उंगलियां तब उठी जब इस मामले की न्यायिक जांच हुई तो यही हंसराज सरकारी गवाह बन गया। उस की पूरी भूमिका प्रश्नवाचक चिन्ह उत्पन्न करती है कि क्या वह पुलिस एजेंट था? क्या उसके जरिये ही ब्रिटिश शासकों ने जघन्य हत्याकांड का षडयंत्र रचा? हालांकि तथ्यों के अभाव में यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है। किन्तु स्थितियों का ग्वेषणापरक अनुशीलन किया जाए तो बात समझ में आ जाती है कि जनरल डायर इतना निर्मम क्यों हो गया था कि, ''उसने वहां मौजूद लोगों को चुन-चुन कर मारने के आदेश दिए जब तक फायरिंग का पूरा गोला-बारूद खत्म नहीं हो गया।'' एक इतिहासकार का तो स्पष्ट तर्क है कि हंसराज के माध्यम से सभा के नाम पर उस क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा लोगों को एकत्रित किया गया, जहां पहले ही बैसाखी मनाने लोगों की भीड़ एकत्रित होनी थी। अंग्रेज जानते थे कि जहां वहां एकाएक गोलीबारी की जाएगी तो भगदड़ में संकरी गलियों में लोग फंसकर रह जाएंगे और उनका निकलना मुश्किल हो जाएगा। चौड़े रास्ते पर तो पहले ही फौजियों ने कब्जा कर रखा था।

इस हत्याकांड की जांच के लिए गठित हंटर समिति को दिए गए जनरल डायर के बयान की विभिषिका को समझें तो उसने साफ कहा था कि सभा पर गोली चलाने का उसका उद्देश्य अमृतसर में आतंक पैदा करना था इसलिए उसने बिखरती सभा के बीच भागते लोगों पर गोलियां चलाना जारी रखा।

उसको मलाल था कि रास्ता संकरा होने के कारण वो बख्तरबंद गाड़ियां अंदर नहीं ले जा पाया, अन्यथा उसका इरादा तो सभी को समाप्त कर देने का था। अमृतसर आग के तवे की तरह तो 9 अप्रेल को ही तपने लगा था। उस दिन रामनवमी थी और हिन्दू- मुसलमानों ने मिलकर जुलूस निकाला था। इसी दिन डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल का गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ्तारी से पूरा अमृतसर सुलग उठा। इसके विरोध में जुलूस निकला तो अंग्रेज शासकों ने उस पर धुंआधार गोलियां बरसाई। नतीजतन एक दर्जन लोग शहीद हो गए। बिगड़ते हालात के मद्देनजर अमृतसर का शासन जनरल डायर के नेतृत्व में सेना को सौंप दिया गया। सैनिक शासन ने जुलूसों और सभाओं पर प्रतिबंध तो लगा दिया किन्तु इसका प्रचार-प्रसार नहीं किया। जबकि 13 अप्रेल को बैसाखी के मौके पर आमसभा की रहस्यमय घोषणा को ज्यादा हवा दी। ऐसे में प्रतिबंध की जानकारी किसको होनी थी? आखिर इस सवाल को भी आज तक क्यों नहीं टटोला गया कि इस क्षेत्र में सभा और मेले में जुटे लोगों की संख्या इस हजार से ज्यादा हो गई तभी जनरल डायर वहां क्यों पहुंचा? डायर की निर्मर्मता की इससे बड़ी मिसाल क्या होगी कि उसने इस गोलीबारी में 42 बच्चों को भी भून डाला, जिसमें एक बच्चे की आयु तो सिर्फ सात महीने की थी।

शासन तंत्र की समझ रखने वालों को कहना है कि जब भी शांतिभंग का अंदेशा होता है तो सुरक्षा बल पहले भीड़ को तितर-बितर होने का संदेश देते हैं। फिर भी लोग नहीं हटते तो उन्हें खदेड़ने के लिए हवाई फायर किए जाते हैं। लेनिक जनरल डायर ने तो यह जानने की कोशिश भी उस वक्त नहीं की कि क्या वहां चल रहे भाषणों से शांतिभंग का खतरा उत्पन्न हो रहा था? तथा भीड़ को चेतावनी दिए बिना ही उसने गोलियां चलाने का आदेश दे दिया। फिर आखिर ऐसा कौनसा फसाद हो गया था कि वहां लोगों पर दस मिनट तक अंधा धुंध गोलियां चलती रहीं? बैसाखी पर लिख गए नरसंहार के काले अध्याय को लेकर हजारों प्रश्न अनुत्तरित हैं। हालांकि जनरल डायर को उसके किए की सजा भी मिली। किन्तु इस क्रूर अध्याय की अंतर्कथा बैसाखी के उल्लास को सजल किए बिना नहीं रहती।

॥ ओ३म्॥

पंजीकरण संख्या : रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वाधान में

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टैलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959

Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रुप से लगाएं।"

1. युवक/युवती का नाम :..... गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई .....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/..... मासिक आय.....

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता:.....
8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई - अविवाहित.....विवाहित..... । बहिन- अविवाहित.....विवाहित..... ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? (आवश्यक).....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/युवती यदि इनमें से होतो सही पर (✓) लगाएं : विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :
14. विशेष: किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें: .....

कार्यक्रम स्थल :- आर्य समाज, बाहरी रिंग रोड़ विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

दिनांक :- 9 जुलाई 2017, रविवार / समय :- प्रातः 10 बजे से

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

श्री अर्जुनदेव चद्दा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428

श्री एस.पी. सिंह, संयोजक- दिल्ली प्रदेश मो. 09540040324

श्री वेदप्रकाश प्रधान, श्री सूर्यकान्त मिश्रा, प्रचारमंत्री, श्री विपिन चन्द्र सरीन, कोषाध्यक्ष

मो. 9873110044 9968246177 9810479106

आर्य समाज, बाहरी रिंग रोड़ विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

नोट : 1. ई-मेल एडरेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है

2. विक्लांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नही होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
   यह फार्म ऑनलाइन भी भर सकते है लिंक - matrimony.thearyasamaj.org
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 300/- (तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 15 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। कॉलम नं. 11 भरना आवश्यक है।
7. रजिस्ट्रेशन शुल्क 300/- प्राप्त किये जाने पर ही रजिस्ट्रेशन फार्म स्वीकार किया जायेगा।

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

योग शिविर में दिया नशामुक्ति का संदेश

योग साधकों ने लिया नषामुक्त समाज बनाने का संकल्प

कोटा। वैशाखी पर्व से प्रारम्भ पतंजलि किसान सेवा समिति कोटा के तत्वावधान में पंच दिवसीय योग षिविर में नषामुक्ति का संदेष दिया गया।

ग्राम खेड़ारसूलपुर कोटा में 13 अप्रेल से चल रहे योग शिविर में मुख्य अतिथि सिक्ख धर्माचार्य ज्ञानी गुरूनाम सिंह ने बैषाखी पर्व की महत्ता बतलाते हुए कहा कि गुरू गोविन्द सिंह जी तम्बाकू एवं नषे की अन्य वस्तुओं का व्यापक विरोध किया। नषा षरीर में वो ही काम करता है जो काम सूखी घाय में आग की चिंगारी करती है इसलिए नषे से बचना चाहिए।

कार्यक्रम में आर्यसमाज के वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र षास्त्री ने अपने उद्बोधन में कह कि कुसंग के फलस्वरूप लोगों मे नषे की लत लग जाती है। षारीरिक नुकसान के साथ यह समाज में आपराधिक गतिविधियों को जन्म देता है। ध्यान, योग एवं प्राणायाम के द्वारा मन को नियंत्रण मे रखकर नषे की लत से मुक्ति पाई जा सकती है।

इस अवसर पर आर्यसमाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने नषे से होने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों की जानकारी दी। उन्होंने उपस्थित लोगों के समक्ष धूम्रपान से होनै वाले नुकसान को बताने के लिए सफेद रूमाल लेकर बीड़ी पीने वाले व्यक्ति को बीड़ी का कष खींचकर धुंआ रूमाल पर छोड़ने को कहा। रूमाल पर बने काले छल्ले लोगों को दिखाये। जिसे देखकर उपस्थित लोगों ने हाथ उठाकर नषामुक्त समाज बनाने का संकल्प लिया।

पतंजलि योग समिति के राज्य प्रभारी अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि योग हमारी दिनचर्या का अभिन्न अंग है। इससे न केवल विभिन्न बिमारियों से बचा जा सकता है अपितु यह सामाजिक विकास का पर्याय है।

इस अवसर पर भारत स्वाभिमान जिला संयोजक विवेक गर्ग, पतंजलि योग समिति के प्रदीप षर्मा, किसान सेवा समिति प्रभारी प्रहलाद सिंह, महिला प्रभारी मिथलेष गौड़, जिला योग प्रचारक अन्तिम आर्य, संगठन सचिव, वीरेन्द्र जीत सिंह रंधावा तथा आर्यसमाज खेड़ारसूलपुर के प्रधान रामनारायण, मंत्री बंशीलाल एवं हीरालाल गहलोत, कैलाष नामा और बड़ी संख्या में योग साधक पुरूष, महिलाएं, युवा तथा बच्चे उपस्थित रहे। कार्यक्रम का प्रारंभ योग, आसन, प्राणायाम से हुआ तथा समापन षांतिपाठ के साथ हुआ।

डीएवी (कोटा)में 21 कुण्डीय हवन के साथ नये सत्र का शुभारम्भ

कोटा। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कोटा में 6 अप्रेल 2017 को नये सत्र का शुभारम्भ वैदिक मंत्रों एवं 21 कुण्डीय हवन के साथ किया गया । जिसमें विद्यालय के सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों एवं कक्षाअध्यापकों ने अलग-अलग हवन कुण्ड पर वैदिक ऋचाओं के साथ विद्यालय के धर्मशिक्षक श्री शोभाराम आर्य के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया । 10 सीजीपीए प्राप्त करने वाले प्रतिभाशाली छात्रों के साथ मुख्य अतिथि महोदय, उपाध्यक्ष एल.एम.सी. एम. एल. पाटोदी एवं वशिष्ट अतिथि अर्जुनदेव चड्ढा एवं स्कूल प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम के साथ मंच पर यज्ञ की आहूतियॉ प्रदान की। मुख्य अतिथि महोदय, उपाध्यक्ष एल.एम.सी. श्रीमान् एम. एल. पाटोदी ने इस अवसर पर छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि डीएवी में सिखाये गये संस्कारों को जीवन में अपनाये तथा उनका प्रचार प्रसार करे। श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने भी यज्ञ की महिमा को स्पष्ट किया।

इस अवसर पर विद्यालय प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने विद्यार्थियों एव स्टॉफको सम्बोधित करते हुए कहा कि शैक्षिक और सहशैक्षणिक गतिविधियों में डीएवी की 800 से अधिक शाखायें नित नये कीर्तिमान रच रही है, हमें चाहिए कि हम विद्यार्थियों को सृजनशील और कुछ नया सोचने के लिए प्रेरित करे। उन्होंने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की ।

आर्यसमाज ने बांटी जरूरतमंद महिलाओं को चादरें

कोटा। आर्यसमाज कोटा के सदस्यों ने जरूरतमंद महिलाओं को चादरें बांटी। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के तत्वावधान में आर्यसमाज कोटा के पदाधिकारियों द्वारा दादाबाड़ी तिराहे के पास स्थित झुग्गी झोंपड़ी में रहने वाली जरूरतमंद महिलाओं को खेस एवं चादरों का वितरण किया गया।

आज आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा की अगुवाई में दल जिसमें डीएवी के धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य आर्यसमाज, तलवण्डी के प्रधान आर.सी. आर्य, विज्ञाननगर के प्रधान डा. के.एल. दिवाकर, पूर्व प्रधान जे.एस, दुबे, सुमेश कुमार गांधी, आदि मजदूर बस्ती पहुंचे। इस अवसर पर आर्यसमाज जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने बताया कि अपने सामाजिक सरोकार के कार्यों के अन्तर्गत आर्यसमाज जिला सभा कोटा जरूरतमंदों को विभिन्न अवसरों पर आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध करा महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग पर चल रहा है। परोपकार करना धर्म का मूर्तरूप है।

राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ कर शहीदों को किया स्मरण

महापुरुषों के स्मरण से वर्तमान पीढ़ी ले प्रेरणा-अग्निमित्र शास्त्री

कोटा। आर्यसमाज तलवण्डी कोटा द्वारा राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राश्ट्र पर बलिदान होने वाले क्रान्तिकारियों को राश्ट्र एवं संस्कृति के संरक्षण का कार्य करना चाहिए। अपने पूर्वजों के इतिहास पर गर्व करना चाहिए।

सहसंयोजक कृश्णन राजगुरू ने बताया कि इस अवसर पर आर्यसमाज तलवण्डी के प्रधान रामचरण आर्य ने षहीद भगत सिंह का प्रियगीत मेरा रंग दे बसंती चोला- सुनाकर भावविभोर कर दिया। साथ ही सुमन बाला सक्सेना, नम्रता खुराना, पुरूशोत्तम आर्य, भैरूलाल षर्मा ने देषभक्ति के गीत प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम का संचालन आर्यसमाज के मंत्री भैरूलाल षर्मा ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में आर्यसमाज के सदस्य महिला पुरूश एवं स्थानीय जन उपस्थित थे।

स्मरण किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक षान्तनु षर्मा ने बताया कि महावीर नगर तृतीय कोटा पर आयोजित इस कार्यक्रम में आचार्य अग्निमित्र षास्त्री के ब्रह्मत्व में वेदमंत्रों के माध्यम से राश्ट्र के कल्याण के लिए आहुतियां प्रदान की गई। उपस्थित आर्यजनों ने वैदिक समृद्धि सूक्त से आहुतियां दी।

यज्ञ के उपरान्त आयोजित सत्संग में आर्यविद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें अपने क्रांन्तिकारी षहीदों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

समाचार पत्र शहीद जगत कोटा (मासिक)

फार्म FORM-4
(नियम 8 को देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	: कोटा
2. प्रकाशन अवधि	: मासिक
3. मुद्रक का नाम	: मनोहर पारीक
क्या भारत का नागरिक है	: हां
पता	: जनधारणा प्रिंटर्स, 70 समाचार पत्र परिसर, महावीर नगर प्रथम, कोटा
4. प्रकाशक का नाम	: अर्जुनदेव चढ्डा
क्या भारत का नागरिक है	: हां
पता	: आर्यभवन 4-प-28 विज्ञाननगर, कोटा
5. सम्पादक का नाम	: अर्जुनदेव चढ्डा
क्या भारत का नागरिक है	: हां
पता	: आर्यभवन 4-प-28 विज्ञाननगर, कोटा
6. उप व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी से एक प्रतिशत से अधिक से साझेदार या हिस्सेदार हों	: अर्जुनदेव चढ्डा : आर्यभवन 4-प-28 विज्ञाननगर, कोटा

मैं अर्जुनदेव चढ्डा एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

दिनांक- 15 अप्रेल 2017

अर्जुनदेव चढ्डा
प्रकाशक के हस्ताक्षर

स्वामी, प्रकाशक एवं सम्पादक अर्जुन देव चड्ढा द्वारा मुद्रक मनोहर पारीक द्वारा जनधारणा प्रिंटर्स, 70 समाचार पत्र परिसर, महावीर नगर प्रथम, कोटा से मुद्रित एवं 'आर्यभवन' 4-प-28, विज्ञाननगर, कोटा-324005 से प्रकाशित। फोन: 0744-2422428। प्रबन्ध सम्पादक राकेश चड्ढा।